खुशबूदार और आकर्षक पुष्प है नरगिस

लोकेन्द्र सिंह*, माम चन्द सिंह*, प्रीति डागर, अभिषेक मिश्रा*** और **सुधीर कुमार*****

"पुष्पों का हमारे जीवन में उतना ही मूल्य है जितना फल और सब्जियों का महत्व है। पुष्प, हमारे दैनिक जीवन में बढ़ते तनाव को कम करने में सहायक होते हैं। आज के समय में इनकी खेती, मुनाफे का सौदा बनती जा रही है। नरगिस भी एक लाभकारी कर्तित पुष्प है जिसकी खेती करके किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

नरगिस, शीतोष्ण कटिबंधीय पौधा है और यह खुशबूदार व अत्यंत आकर्षक फूल पैदा करता है। इसके पौधे पर पट्टी के आकार के पत्ते होते हैं। इसके मध्य भाग से बिना पत्तियों की डंडी या स्कैप निकलती है। इस स्कैप के ऊपरी भाग में प्रजाति के अनुरूप एक से आठ तक फूल आते हैं। इस फूल का उपयोग मुख्यत: कटे फूल के तौर पर किया जाता है। इसके अलावा नरगिस को गमलों, क्यारियों, बॉर्डर तथा सड़कों के साथ- साथ भी लगाया जाता है।

प्रजातियाँ

सर विंस्टन चर्चिल, तहीती बैरट व्हाइट, आइस फोलिस कैलिफोर्निया सन, ब्राइउल गाउन, डच मास्टर, चीअरफुलनेस, टेक्सास सेमी डबल।

जलवायु एव मृदा

नरगिस की व्यावसायिक खेती के लिए दोमट या बलुई मृदा का उपयोग किया जाता है। इसके लिए भूमि पी.एच.मान 6.5 से 7.5 के मध्य और जल निकासी की उत्तम व्यवस्था होनी आवश्यक है। इसकी खेती के लिए उचित प्रकाश की जरूरत होती है। पुष्प उत्पादन की व्यवस्था दिन व रात्रि की अवधि पर निर्भर नहीं करती है। परंतु लंबे दिन लंबी पुष्प डंडी बनाने में सहायक होते हैं। नरगिस की खेती के लिए 11-17^0 सेल्सियस तापमान, उचित बढ़वार एवं पुष्पन हेतु उपयुक्त पाया गया है।

प्रवर्धन

नरगिस का प्रवर्धन एवं प्रसारण प्राय: बीजों एव कंदों द्वारा किया जाता है। बीजों को निकालकर ग्रीन हाउस में बोया जाता है। पुष्पीय आकार का कंद बनने में समय लगता

कंदीय सड़न

नरगिस में कंदीय सड़न काफी मात्रा में पाई जाती है। अगर तापमान 21^0 सेल्सियस से ऊपर चला जाए तो उसके लिए 0.5 प्रतिशत कैप्टान का छिड़काव उपयुक्त पाया गया है। इसके साथ-साथ कंदों का 2.0 प्रतिशत फिनाइल मरकरी एसिटेट से 2 मिनट का उपचार भी लाभदायक होता है। कंदों और तनों में इलवर्म नामक कीट, कंदों के मुलायम ऊतकों द्वारा घुसकर तनों को प्रभावित करता है। कंदों का गर्म पानी में 3 घंटे तक उपचार करने से इस कीट से बचाव किया जा सकता है।

*संरक्षित कृषि प्रौद्योगिकी केंद्र, **कंप्यूटर अनुप्रयोग संभाग; ***पादप कार्यिकी संभाग भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

फूलों की कटाई

नरगिस के फूलों को गूस नेक स्टेज अर्थात हंस की गर्दन के आकार वाली अवस्था पर जमीन से 10-15 सें.मी. ऊपर से काटा जाता है। फूलों को काटने के पश्चात पानी से भरी बाल्टी में रखें। नरगिस की गुच्छों वाली किस्मों को 2 खिले फूल वाली अवस्था में काटना चाहिए। कटाई प्राय: सुबह के समय करनी ही उचित मानी जाती है।

कटे फूलों की जीवनदायिनी (शेल्फ लाइफ) आयु 7-8 दिनों तक पाई गई है। दस-दस फूलों के अलग-अलग गुच्छों को परफोरटेड (छिद्रयुक्त) पॉलीथीन में लपेटकर सीधा रखकर बेचना चाहिए। इन फूलों की अच्छी जीवनदायिनी आयु के लिए बाजार में भेजने से पहले प्राय: 25 पी पी एम सिल्वर नाइट्रेट एवं 6-10 प्रतिशत शर्करा के घोल में 2-4 घंटे तक अवश्य रखें। कटाई के उपरांत फूलों को ज्यादा से ज्यादा $1-2^0$ सेल्सियस पर 3 दिनों तक ही भंडारित किया जा सकता है। कटे फूलों को पूर्ण रूप से खिलने के लिए $10-16^0$ सेल्सियस तापमान उचित पाया गया है।

पुष्पण की अवस्था में नरगिस

है। बीज द्वारा प्रवर्धन का उपयोग प्रजनक द्वारा नई प्रजातियों को विकसित करने के लिए किया जाता है।

नरगिस की व्यावसायिक खेती के लिए कंदों का ही उपयोग किया जाता है । कन्दों से अंकुरण के लिए 20 सेल्सियस के तापमान पर भंडारण के उपरांत $20-22^0$ सेल्सियस तापमान का उपयोग 4-6 सप्ताह तक किया जाता है। बीज हेतु आवश्यक आकार के कंद बनने में 3-4 साल का समय लगता है।

कन्द गुच्छों को विभाजित कर अथवा छोटे कंदों या ऑफसेट द्वारा भी प्रसारण किया जा सकता है । इसके साथ-साथ दूसरी प्रवर्धन विधियां जैसे स्कोरिंग तथा चिपिंग या ट्विन स्केलिंग भी काफी प्रचलित हैं। स्कोरिंग विधि में कंदों के अंकुरण के स्थान पर एक गहरा V-आकार का घाव जुलाई माह से सितंबर तक कर दिया जाता है जिससे कंदों की मांसल पत्तियों के हिस्सों से 15-20 छोटी-छोटी कन्दियाँ बनती हैं। इन कन्दियों को बनने के लिए लगभग 2-3 वर्ष लग जाते हैं। दूसरी विधि में कंद की आधार पट्टिका को पूर्ण रूप से हटा दिया जाता है तथा ऊपर की ओर जाने वाली शाखा पर एक त्रिशंकु आकार का गहरा कट लगाया जाता है ताकि कन्दों के शल्क अथवा स्केलज के कटे हुए किनारों पर छोटी-छोटी कन्दियाँ बन सकें। इन छोटी-छोटी कन्दियाँ को पूर्ण कंद बनने में चार से पाँच वर्ष का समय लगता है। इस विधि को स्कूपिंग कहते हैं।

बुआई का समय

बुआई सितम्बर-अक्तूबर माह के मध्य में, पूर्ण रूप से विकसित कंदों द्वारा की जाती है। कंदों की बुआई से पहले इतना ध्यान रखना चाहिए कि प्रति कंद भार 25 ग्राम से ज्यादा हो। कंदों को लगाने की दूरी पंक्ति से पंक्ति 20 सें.मी. एवं कंद से कंद 10 सें.मी. रखनी चाहिए। एक वर्ग मीटर की क्यारी में लगभग 40-45 कंदों को बोया जा सकता है।

गहराई एवं उपचार

कंदों के लगाने की गहराई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कंदों के आकार के आधार पर उनको लगाना चाहिए। 10-14 सें.मी. आकार के पूर्ण विकसित कंदों को लगभग 8-10 सें.मी. की गहराई पर बोया जाता है। किसी भी कवकजनित रोग से बचने के लिए कंदों को लगाने से पहले कार्बोंडिजम (1%) के घोल में एक घंटा अवश्य उपचार करना चाहिए।

सिंचाई, खाद एवं उर्वरक

कंदों की बुआई के तुरंत बाद ज्यादा सिंचाई नहीं करनी चाहिए अन्यथा कंदों के सड़ने की आशंका बनी रहती है। जैसे-जैसे अंकुरण होना शुरू हो जाए, सप्ताह में दो बार अवश्य हल्की सिंचाई करनी चाहिए। 10 कि.ग्रा. गली-सड़ी गोबर की खाद प्रति वर्ग मीटर के साथ नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश क्रमश: 250, 625 एवं 625 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से देनी चाहिये ।

नाइट्रोजन की आधी मात्रा कंदों की बुआई के समय मिलाएं तथा शेष मात्रा को पत्तियों के आने के समय देना चाहिए। नाइट्रोजन की प्रथम आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूर्ण मात्रा कंदों की बुआई के समय देनी चाहिए।

कंदों को उखाड़ना एवं भंडारण

पौधों पर कटाई के उपरांत पत्तियां जैसे ही मुरझाने या सूखने लग जाएं तो कंदों को जमीन से उखाड़ लेना चाहिए। इन कंदों को उखाड़ने के बाद पानी से धोएं तथा कंदों का भंडारण से पूर्व कार्बेनडाजिम (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) तथा डाईथेन (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) के घोल में 30-60 मिनट तक उपचार करें। कंदों को प्राय: कम से कम 7 दिनों तक प्लास्टिक के ऊपर पंक्तिबद्ध कर छाया में रखकर सुखाना चाहिए। नरगिस के कंदों को ठंडी एवं हवादार जगह में कम गहराई वाली तश्तरियों में रखना चाहिए। भंडारण-गृह में कंदों को अधिक नमी से बचाना जरूरी होता है। कंदों का 9^0 सेल्सियस तापमान एवं 75% आर्दता पर 6-8 सप्ताह तक जालीनुमा थैलियों में भी भंडारण कर सकते हैं।

फूलों की उपज

औसत रूप से चार लाख कटे फूल एवं आठ लाख कन्द प्रति हैक्टर की उपज सहज रूप से प्राप्त हो जाती है। ■